आपातकाल में सृजन फुलवारी

श्रीमती रंजना श्रीवास्तव

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

श्रीमती रंजना श्रीवास्तव

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-128-2
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, श्रीमती रंजना श्रीवास्तव
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY MRS. RANJANA SRIVASTAV

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	देश की माटी है चन्दन	6
2.	मैं जिंदगी को फिर एक बार जीना चाहती हूँ	7
3.	सत्य की सिसकियों की आवाज़ आ रही है	8
4.	निजकर्मों का फल भुगतेगा मानवस्वार्थ अमंगल	9
5.	आँसुओं का दर्द से सम्बन्ध है तुम भी निभाओ ना	10
6.	हेरा फेरी	11
7.	कलि की माया है : उल्टा सीधा सब मान्य है	12
8.	उत्सव कैसे खुशियाँ देगा इस कलियुग के दौर में	13
9.	सपने जी लूँगी	14
10.	रख लो ना मेरा मान	15
11.	आज सयानी हो गई	16
12.	प्यार का मौसम सूनी आंखों में	17
13.	वृद्ध पिता की प्रतीक्षा खत्म कर दो ना!	18
14.	कृतज्ञता ज्ञापन की कला	19
15.	कुछ प्रतिशत अभी है बाकी	20-21

देश की माटी है चन्दन

देशी परिधान में छुपकर बैठा, विदेशियों का यार गद्दार
नाकारा शत्रु संग जा मिला, पीठ पर बारम्बार वार

उदरपूर्ति और स्वार्थ हेतु सदा, उसकी जिह्वा लपलपाती
सीता की रक्षा कलियुग में कैसे, शेष निकृष्ट विश्वासघाती

जात धर्म की खातिर उकसाया, एक दूजे को लड़वाया
अपनी रोटियाँ थीं सेंकनी, चूल्हा फूँक फूँक भड़काया

कोशिशें रंग लाईं मतवालों की, कण्ठ देशप्रेम सज गया
क्रान्तिवीरों का बोलबाला, अब चहुँ दिश मच गया

अनन्तनिद्रा में वीर सो गए, न्योछावर कर दी जान
विशेष दिवस मुक्ति का आया, देशभक्त करें अभिमान

स्वतन्त्र माटी की अपनी सी खुशबू, चन्दन सी भारत माता
देश की माटी को शीश नवाता, भारत का भाग्य विधाता

मैं जिंदगी को फिर एक बार जीना चाहती हूँ

कच्चे प्यार के कच्चे धागों से जीवन उधड़ गया
उधड़े उधड़े कच्चे धागों से रंग भी निकल गया

उधड़ी बखिया को फिर से सीना चाहती हूँ
मैं जिंदगी को फिर एक बार जीना चाहती हूँ

नफरतों ने तोड़े न जाने कितने अपनों के घर
छूट गए सारे रिश्ते बेगाना हुआ प्यार का सफर

अब फिर से प्यार का वही मंजर चाहती हूँ
मैं जिंदगी को फिर एक बार जीना चाहती हूँ

क्लेश कलह और शोर है दुनिया में चहुँ ओर
खुशियों के इन्तज़ार में भीगी नयनों की कोर

खुशगवार हवा में श्वास प्रश्वास चाहती हूँ
मैं जिंदगी को फिर एक बार जीना चाहती हूँ

सत्य की सिसकियों की आवाज़ आ रही है

दर्द की अनन्त यात्रा संग आँसुओं की बरसात है
जाने कितने दर्द का कितना अंश किसके पास है

सत्य का खुरदुरा ज़मींदोज़ धरातल आस पास है
क्यों उलझते हो ऊपरी सतह में यही भ्रम जाल है

छलप्रपंच करने वाले का चयन बाजार कर रहा है
ईमानदारी का हाट पल पल लुप्त होता जा रहा है

जीते जी न सहायता न तारीफ़ में कसीदे पढ़ना है
प्रशंसा पाने के लिए बस शायद मुझे अब मरना है

अपनापन तो मौत के बाद उजागर होते देखा है
वर्ना नफरत साथ लिए गिद्धों को मंडराते देखा है

निजकर्मों का फल भुगतेगा मानवस्वार्थ अमंगल

तापमान परिवर्तित और ओजोन पर्त हुई छिद्रित
सागर का पाट बढ़ गया भू गर्भ खतरे से चिह्नित

खोदी गहरी वसुधा पहले न छोड़ा नभ न समन्दर
रोगों का जाल बिछ गया वायु में तरंगों का बवंडर

शिक्षा में आए परिवर्तन बदले दृष्टिकोण और दृष्टि
नारी न हो भोग की वस्तु इससे निर्मित सारी सृष्टि

चली हवा फैशन की आया पश्चिमी नग्न परिवर्तन
मूर्खों से अटी पड़ी है दुनिया प्रतिपल ही आवर्तन

मतलब के हैं रिश्ते सारे खेलें दाँव औ खून खराबा
बराबरी का नशा चढ़ा हर परिवार में शोर शराबा

मुक्ति मिले अब कलियुग से ये है सच्चों की चाहत
अच्छाई सुख की श्वास ले सके बुराई से हो राहत

हेरा फेरी

बरबादी का कारण बन गया, जब उलझा हेरा फेरी
करनी के फलस्वरूप हिल गईं, बुनियादें तेरी मेरी

गलत राह पर चल पड़े तुम, भ्रमित हो यहाँ वहाँ
कितना समझाया फिर भी, भटके तुम जहाँ तहाँ

बात बात में बात बिगड़ी, पहुँचीं बातें इधर उधर
यम गति ने निगल लिया, अपनी नौका फँसी भँवर

हीर रांझा का प्रेम हो गया, अमर इतिहास काल
लैला की चाहत में मजनू ने, पत्थर भी सहे भाल

अपना भी आशियाना होगा, हम होंगे दीया बाती
गाढ़ी प्रेम स्याही से लिखूँगी, अब अपनी प्रेम पाती

न हों रिश्तों में अपने देखो, बेईमानी जैसे आसार
टूटकर बिखर न जाए अब, अपना छोटा सा संसार

आँसुओं का दर्द से सम्बन्ध है तुम भी निभाओ ना!

रिश्ते में समझौता सही झुकना पड़े झुक जाओ ना
यह पादप विश्वास का स्नेह की खाद से उगाओ ना

मंजिल पाना किसी को छोड़ने की कीमत पर नहीं
रिश्तों को अपनेपन से निभाना ईर्ष्या भाव से नहीं

नफ़रत में जलता वाचाल हुआ शून्यता का शिकार
मित्रता होती नि:स्वार्थ मिलकर बसाओ नव संसार

बाती का प्रेम अधूरा जो पतंगों का आशियाना नहीं
सिद्धि क्या जब घर में अपनों का आनाजाना नहीं

उत्सव कैसे खुशियाँ देगा इस कलियुग के दौर में

गुरुग्रन्थ बाइबल चाहे कुरान या रामायण लो बाँच
कलि में जातिवाद धर्मवाद व व्यापारवाद ही साँच

गिद्धदृष्टि जमाए दुष्टों संग बैठी सत्ता लगाकर घात
सुरसा अहिनी घर घर बसती कैसे हो पर्वों की बात

कोई विभीषण न आएगा अधर्म फसल लहराएगी
जामवंत की कोशिशें भी इतिहास बदल न पाएँगी

राजनैतिक उत्सवों में पतंग जिसकी ऊँची उड़ रही
शासनकाल में उसके देखो निरीह जनता पिस रही

प्रेम का उत्सव सर्वश्रेष्ठ होता न रखो भीतर रावण
उत्सव में खुशियाँ हों दूनी मन जब निश्छल पावन

इन्द्रिय विजय ही विजयदशमी हर दिन उत्सव रंग
नभ में छाएँ नैतिक मूल्यों वाले इंद्रधनुषी सप्त रंग

कलि की माया है : उल्टा सीधा ही सर्वमान्य है

पत्रकार सच झूठ लिख बना मौन पाञ्चजन्य है
काले धन का दानकर धनी समझे खुद को धन्य है
तमाशबीन अकर्मण्य स्वार्थ बना आज अग्रगण्य है
कलि की माया है : उल्टा सीधा ही सर्वमान्य है

सच्चे शिक्षक की कक्षा में ज्ञान विज्ञान की चर्चा है
सु-भविष्य हो छात्रों का कठिन जीवन का पर्चा है
झूठा, झूठेसाक्ष्य बनाकर करता खुद की सुरक्षा है
कलि की माया है : उल्टा सीधा ही सर्वमान्य है

राजनीति का आँगन भी इससे भला कहाँ छूटा है
सच्चे दावे का अधिकारी सिद्ध किया गया झूठा है
झूठ अपना परचम लहराए गर्व से सर ऊँचा है
कलि की माया है : उल्टा सीधा ही सर्वमान्य है

कार्यस्थल की राजनीति से कौन यहाँ अछूता है
काबिलियत के हाथ में मात्र बाबूगिरी का कोटा है
मौकापरस्त चाटुकारिता रत अभिनेता ही नेता है
कलि की माया है : उल्टा सीधा ही सर्वमान्य है

घर परिवार टूट रहे हैं फैला राजनीति का टंटा है
करने वाले की कदर नहीं जो करता है वो मरता है
राजनीति का खिलाड़ी ही सबका बना चहेता है
कलि की माया है : उल्टा सीधा ही सर्वमान्य है

सपने जी लूँगी

सपनों की दस्तक पर बोया बीज सिकता शोख में
एहसास-ए-अंकुर जीवन्त हुआ मिट्टी की कोख में

सपनों तक जाने वाला हर पथ स्वीकार किया मैंने
नीलाभ पटल पर अपना नववर्ण इन्द्रधनु रचा मैंने

तुम आए रुके नहीं उनींदी अँखियाँ प्रतीक्षारत रहीं
सपने टूटते गए सपनों की दुनिया झूठ बनती रही

छत पर अधखिली पंखुड़ियाँ थीं बिखरीं इधर उधर
अनकहे जज़्बातों से टूटता सा गया दिल-ए-जिगर

जिसे चाहा वो दिल में अब भी सपनों सा रहता है
अब तो सपने में भी वह काँटे की मानिंद चुभता है

नींद में न देखो सपने ये काँच से भी नाजुक होते हैं
इनका भरोसा क्या आँख खुलते ही बिखर जाते हैं

अब भंवर में पतवार न छोड़ूँगी अकर्मण्य न बैठूँगी
इतिहास बदल दूँगी सागर पर मैं सेतु बना लूँगी

जिसका आगाज़ नहीं मैं अंजाम उसे दे सकती हूँ
चोटों से डरती नहीं ख्वाब मुकम्मल कर सकती हूँ

आज सयानी हो गई

कुछ फूलों को प्यार से सहला कर हवा गुज़र गई
मेरे मन की बगिया में यादों की बागवानी हो गई

चाँद की लगन में चाँदनी की रात दीवाली हो गई
या मेरे मौला! चाँदनी तो चाँद की दीवानी हो गई

खगों के पंखों से फिज़ा रूह-ए-आसमानी हो गई
ऊँची उड़ान भरने में हवाओं की मेहरबानी हो गई

लहरों पर होकर सवार एक कश्ती बेइंतहा बढ़ गई
आशिकाना मिजाज़ में हर लहर की रवानी हो गई

हस्त रेखाओं में मुझे कैद-ए-बामुशक्कत हो गई
जीवन की हर घटना मुकद्दर की कहानी हो गई

अंदर बाहर से ठोकरों से पलपल कर सख्त हो गई
मेरी हालत-ए-तूफान अब लफ्ज़-ए-बयानी हो गई

ग़म-ए-अश्क बहाकर आँखें अब पनीली हो गईं
बात तेरी चली थी महफ़िल में मेरी ज़ुबानी हो गई

लड़ते सहते हर पल हर घटना एक सीख हो गई
जिन्दगी बिन मक़सद मानों आज सयानी हो गई

भावनाओं का सागर उठा चाल भी तूफानी हो गई
घुटन के कहर बरपाने से चिन्ता-ए-पेशानी हो गई

रख लो ना मेरा मान

आया फागुन जिया तरसे सजन घर आ भी जाओ
सरसों फूले टेसू गंध लहके अबीर गुलाल लगाओ
कोयल की कूक मधुर बौर लदीं आम की डालियाँ
सतरंगी साज बजातीं झूमतीं गेहूँ की युवाबालियाँ

बगीचों में महुआ कचनार फूले उन पर भंवरे झूले
कृष्ण राधिका कदम्ब झूलें जाने तुम ही क्यों भूले
दुष्यन्त भूले थे शकुन्तला व गौतमऋषि अहिल्या
उर्वशी भूली उरस्थ पुरुरवा को चित्त विरक्त किया

तुम्हारी विस्मृति असह्य दाह बन ले लेगी मेरे प्राण
मौसम में है प्रेम पनपता कामदेव न चलाओ बाण
फगुनई मद्धम बयार बहे सजन डालो गल बहियाँ
मिलाओ नटखट नैन जिन पर झूले ज़ुल्फ छइयाँ

रक्तश्यामवर्ण सुभोर का आकाशीय प्रेम है रुहानी
मिलो मुझसे इस तरह कि चंचल बयार बहे रुमानी
द्वापरयुग में कृष्ण अनुराग त्रेता में जननायक राम
गोप गोपियाँ या केवट शबरी प्रेम दैवीय श्रेष्ठ काम

मैंने तुमको अपना माना किया स्थापित उच्चस्थान
विरक्त अन्तर्मुख न होऊँ मैं देखो रख लो मेरा मान
यदि भगवान से किया होता प्रेम इस कदर अगाध
सुखशय्या पर पा लेती ब्रह्मचिरन्तन आनंद निर्बाध

प्यार का मौसम सूनी आँखों में

तुम नहीं आए वादा करके मुकर गए बातों बातों में
तुम्हारा अनन्त इन्तज़ार बस गया है सूनी आँखों में

जो ख्वाब देखे संग हमने हमारी ही कल्पनाओं में
अधूरा सा वही ख्वाब बस गया है सूनी आँखों में

रहा मलाल तुम्हें पाने की हर नाकाम कोशिशों में
अन्तिम नाकाम प्रयास बस गया है सूनी आँखों में

दिल को बहलाने को झूठ ही सही मेरे फसानों में
मुख्तसर सा वो ख्वाब बस गया है सूनी आँखों में

आँसुओं का दर्द से रिश्ता बना बिगड़ती बातों में
लरजते दर्द का कम्पन बस गया है सूनी आँखों में

तुम्हें चाहा तुम्हें पूजा तुम्हें बसाया अपनी साँसों में
वो पहला पहला प्यार बस गया है सूनी आँखों में

वृद्ध पिता की प्रतीक्षा खत्म कर दो ना!

मजबूत ढाल से कड़क पिता को कभी शेर सा गरजते देखा था।
लाचार हुए स्वर के कम्पन में अब शब्द फिसलते देखा है।

दमदार कड़क एक आवाज पर बिजली को कड़कते देखा था।
उस बूढ़ी बेबस आवाज को अब मौन में बदलते देखा है।

नजरों से नज़र के मिलते ही लोगों को सिहरते देखा था।
उन्हीं नजरों की गहराई में सूनापन सा मचलते देखा है।

फौलादी हौसलों से डर कर पत्थर को पिघलते देखा था।
थर थर काँपते उन हाथों से बर्तन को फिसलते देखा है।

जिनकी हलकी पदचाप से भी अनुशासन स्वयं आ जाता था।
उनको थके हुए कदमों से असहाय घिसटते देखा है।

गुजरे किस्सों की वसीयत को महफ़िल में बाँटते देखा था।
अब बूढ़ों के आने जाने पर प्रतिबन्ध लगाते देखा है।

इन्तज़ार पिता के आने का परिवार को करते देखा था।
अपनों की एक झलक के लिए छुप-छुप कर बिलखते देखा है।

कृतज्ञता ज्ञापन की कला

कृतज्ञता संस्कार शिष्टाचार है कर्तव्य अपरिमित है
जो कृतज्ञ है ग्रहणशील आदरणीय व असीमित है

कृतज्ञता की अभिव्यक्ति कोमल मन की स्मृति है
ये श्रेष्ठ आत्माओं के लक्षण और उत्कृष्ट प्रवृत्ति है

स्वर्गीय स्पर्श का भाव और शीतल सुहानी भोर है
दिल से दिल तक जाने वाली कच्ची अदृश्य डोर है

जब मन कमजोर पड़ा या विचारों ने राह भुलाई है
जब भी कदम लड़खड़ाए अपनों ने राह दिखाई है

जन्म से लेकर शिक्षा दीक्षा तक अनगिनत यादें हैं
आज अतीत के पन्ने पलटे लिखी यादों की बातें हैं

पितुमात के जीवनदान व धरती अंबर का आभार
मेघों नदियों सागर व सृष्टि के उपकार का आभार

आशीष देने के लिए जो उठे उन हाथों का आभार
साया बनकर हर पल संग रहे उस प्रभु का आभार

कुछ प्रतिशत अभी है बाकी

गौरवशाली वैभवशाली है अपने भारत देश की गाथा
अनेकता में एकता की शक्ति व माटी से शोभित माथा
इसे तोड़ने इसे फोड़ने चली क्रूर छली ब्रिटिश नौसेना
आपस में लड़वाकर हुक्मरानों ने राज्य किया मनमाना

साइमन कमीशन और ईस्ट इण्डिया तानाशाह पुराने
अत्याचारी अन्यायी और कपटी स्वार्थी नियम थे सारे
बंजर कर दी उपजाऊ धरती सिंथेटिक डाई उगवाकर
सरकारी काम की भाषा बदली अंग्रेजी में लिखवाकर

राजगुरु सुखदेव भगतसिंह आलम फांसी का हरकारा
हर गली मोहल्ले द्वारे द्वारे गूंजा इन्कलाब का नारा
गुलामी की जंजीर थी टूटी आजादी की चमक लहराई
हर्ष हर्ष जय जय की गूँज से भारत-भारती मुस्काई

कुछ रह गया था बाकी जो सामान्य दृष्टि से रहा परे
सुसुप्त रह गईं अनगिनत इच्छाएँ सारे रास्ते हुए संकरे
मानसिक उत्पीड़न व आरक्षण से चाहिए थी आज़ादी
जातिगत स्वार्थ व आतंकवाद से जनता को आज़ादी

प्रत्यक्ष दृष्टिगत हो राजनीति और सत्ता का समकोण
बदले नारी के प्रति दृष्टिकोण और विचारों में नवकोण
न हो दिखावटी फेसबुक पर नारी का झूठा सम्मान
हकीकत में हो हर घर में हर नारी नर का अभिमान

विस्मृतसंस्कृति का पुनर्स्थापन भी अभी रहा है बाकी
प्राचीन सुरक्षा नियमों का पालन है अभी तक बाकी
हाँ सुनो ! नहीं सन्तुष्ट मैं अभी कुछ अभी भी है बाकी
मिली है जो आज़ादी उसका कुछ प्रतिशत है बाकी

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

देख जमाने का बिगड़ा रंग गीली आँखें कजरारी हैं।
भीगी आँखों की कोरों में आकांक्षा की फुलवारी है।
अश्रुबिन्दु और भावजगत में आशा की लयकारी है।
गुजर गया कल आया आज अब कल की तैयारी है।

रचनाकार
श्रीमती रंजना श्रीवास्तव
E-mail - srivastavaranjana9@gmail.com
Mobile - 9096808191

कवयित्री श्रीमती रंजना श्रीवास्तव ने विभिन्न कविताओं के माध्यम से अद्वैत वेदांत, नीतिशतक, और उपनिषद के सम्मिश्रण से उपजे नवीन दृष्टिकोण से नयी पीढ़ी को परिचित कराने का प्रयास किया है। गहन विचारों, दार्शनिकता और पारिवारिक वातावरण से ओतप्रोत होकर कवयित्री मानती है कि जीवात्मा ने तीन कलेवर ओढ़ रखे हैं। इन्हें स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर कहते हैं। स्थूल शरीर की शक्ति क्रिया है। सूक्ष्म शरीर मन है और कारण अंतःकरण है। अधिकांश व्यक्ति अपना संपूर्ण जीवन स्थूल शरीर की आकांक्षाओं को पूर्ण करने में व्यतीत कर देते हैं। सूक्ष्म और कारण तक कभी पहुँच ही नहीं पाते।

कलियुग की माया, विषकुम्भ पयोमुख, नैतिक मूल्यों का पतन, करनी का फल भुगतेगा मानव स्वार्थ अमंगल, देश की माटी है चन्दन, जीना चाहती हूँ २ जैसे अनगिनत विषयों को कवयित्री ने कलमबद्ध किया है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-128-2
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/